रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं
महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं
दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम्।।२३।।

रूपम्=रूप को; **महत्**=महान्; **ते**=आपके; **बहु**=अनेक; **वक्त्र**=मुख; **नेत्रम्**=नेत्रों वाले; **महाबाहो**=हे महाबाहु; **बहु**=अनेक; **बाहु**=भुजाओं; **उरु**=जंघा; **पादम्**=पैरों वाले; **बहु उदरम्**=अनेक उदर से युक्त; **बहुदंष्ट्राकरालम्**=बहुत सी विकराल जाड़ों वाले; **दृष्ट्वा**=देखकर; **लोकाः**=सब लोक; **प्रव्यथिताः**=व्याकुल हो रहे हैं; **तथा**=और; **अहम्**=मैं (भी)।

अनुवाद

हे महाबाहु! आपके बहुत से मुख, नेत्र, हाथ, जंघा और पैरों वाले एवं अनेक उदरों से युक्त विकराल जाड़ों वाले इस महान् रूप को देखकर देवताओं सहित सब लोक व्याकुल हो रहे हैं और मैं भी व्याकुल हो रहा हूँ।।२३।।

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं
व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा
धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो।।२४।।

नभःस्पृशम्=आकाश का स्पर्श करते हुए; **दीप्तम्**=ज्योतिर्मय; **अनेक**=विविध; **वर्णम्**=रूपों से युक्त; **व्यात्त**=फैलाये हुए; **आननम्**=मुख; **दीप्त**=प्रकाशमान; **विशाल**=विशाल; **नेत्रम्**=नेत्रों से युक्त; **दृष्ट्वा**=देखकर; **हि**=निःसन्देह; **त्वाम्**=आपको; **प्रव्यथित**=भयभीत; **अन्तरात्मा**=अन्तःकरण वाला; **धृतिम्**=धीरज को; **न**=नहीं; **विन्दामि**=प्राप्त होता हूँ; **शमम्**=मानसिक शान्ति को; **च**=भी; **विष्णो**=हे भगवन्! हे विष्णो।

अनुवाद

हे सर्वान्तशायी विष्णो! आकाश के साथ स्पर्श करते हुए देदीप्यमान नाना रूपों से युक्त तथा फैलाये हुए मुख और तेजोमय विशाल नेत्रों वाले आप को देखकर भयभीत अन्तःकरण वाला मैं धैर्य और शान्ति को नहीं पाता हूँ।।२४।।

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि
दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म
प्रसीद देवेश जगन्निवास।।२५।।

दंष्ट्रा=दाँतों; **करालानि**=विकराल; **च**=तथा; **ते**=आपके; **मुखानि**=मुखों को; **दृष्ट्वा**=देखकर; **एव**=इस प्रकार; **कालानल**=प्रलय काल की अग्नि के समान;